INDIA-ARMENIA: JOINT ISSUE

India recognized Armenia on 26th December, 1991 and the Protocol on establishment of diplomatic relations between India and Armenia was signed on 31st August, 1992 in Moscow. Historians have suggested that when Assyrian warrior queen Semiramis invaded India in 2000 BC, some Armenians accompanied her as they probably did Alexander the Great in 326 BC. According to literary evidence, there were Indian settlements in Armenia established by two Indian Princes who along with their families and large retinue had arrived in Armenia as early as 149 BC and were allotted land in Taron region (now in Turkey) by the then rulers of Armenia.

Emperor Akbar, highly appreciative of the commercial talents and integrity of the Armenians, granted them numerous privileges and considerable religious freedom as also an opportunity to serve in his empire in various capacities. In the 16th century, Armenian communities emerged in Kolkata, Chennai, Mumbai and Agra, where the first Armenian Church was consecrated in 1562. The Armenian language journal "Azdarar" published in Madras (Chennai) in 1794 was the first ever Armenian journal published anywhere in the world. The vestigial Armenian community in India is now mainly settled in Kolkata. The Holy Church of Nazareth, erected in 1707, repaired and embellished in 1734 is the biggest and the oldest Armenian Church in Kolkata.

Bilateral dialogue between India and Armenia is conducted through the mechanisms of Foreign Office Consultations (FOC) and Inter-Governmental Commission on Trade, Economic, Scientific and Technological, Cultural and Educational Cooperation (IGC), and periodic high-level interactions. In recent years, India and Armenia have supported each other in international organizations. India's exports to Armenia were USD 19.87 million in 2017 and imports in the same period were USD 2.83 million.

The first International Day of Yoga was celebrated in Armenia on 21st June, 2015 in which over 300 Armenians from different walks of life participated. The event created awareness about yoga benefits among Armenians. International Day of Yoga was again celebrated in 2016 and 2017.

India has set up a Centre of excellence in ICT in Yerevan and supported projects for supply of computers to schools in Armenia. India offers India Technical Economic Cooperation (ITEC) courses to Armenians and also scholarships to study Hindi in the Kendriya Hindi Sansthan (KHS). The Indian community in Armenia is small and consists largely of over 800 students pursuing medical education at Yerevan State Medical University and Yerevan Engineering & Polytechnic University.

Manipuri Dance:

Manipuri dance is one of the major Indian classical dance forms, named after the region of its origin Manipur, a state in North Eastern India. It is particularly known for its Hindu Vaishnavism themes and exquisite performances of love-inspired dance drama of Radha-Krishna called Raslila. However, the dance is also performed on themes related to Shaivism, Shaktism and regional deities such as Umang Lai during Lai Haraoba. The Manipuri dance is a team performance, with its own unique costumes, aesthetics, conventions and repertoire. The Manipuri dance drama is, for the most part, marked by a performance that is graceful, fluid, sinuous with greater emphasis on hand and upper body gestures. It is accompanied by devotional music created with many instruments, with the beat set by cymbals (kartal or manjira) and double-headed drum (pung or Manipuri mridanga) of sankirtan. Manipuri dance is a religious art and its aim is the expression of spiritual values. Aspects of this performance are celebrated during Hindu festivals and weddings among the Manipuri people, particularly in the ethnic majority of Meitei people. The dance drama choreography shares the plays and stories of 'Vaishnavite Padavalis', that also inspired the major Gaudiya Vaishnava-related performance arts found in Assam and West Bengal.

Hov Arek Dance:

The Armenian dance heritage has been considered one of the oldest and most varied. From the fifth to the third millennia B.C., in the higher regions of Armenia, the land of Ararat, there are rock paintings of scenes of country dancing. These dances were probably accompanied by certain kinds of songs or musical instruments.

The Armenian dance named "Hov Arek" is staged on the basis of lyrical folk song "Hov arek sarer jan" which means "Dear mountains send me a breeze" from the collection of the famous Armenian musicologist, composer and priest Komitas. Hov Arek song is a lyrical song in which a young man implores the mountains to send a breeze to rid him of his woes. It is a deeply moving song in which the delicate melodic line encompasses a wide range of expression. The dance "Hov Arek" is performed by women that make the dance look very graceful, elegant and delicate. All dancers wear the traditional costume to embody the history of their culture

Department of Posts is pleased to release a set of two Commemorative Postage Stamps between India and Armenia on the theme Dance featuring 'Manipuri Dance' of India and 'Hov Arek Dance' of Armenia.

Credits:

Text	:	Based on the information received from Ministry of External Affairs, Government of India and Armenia Post
Stamps/Miniature Sheet/FDC/ Brochure	:	Shri Suresh Kumar
Cancellation Cachet	:	Smt. Nenu Gupta

भारत-आर्मेनिया : संयुक्त डाक-टिकट

भारत ने 26 दिसम्बर, 1991 को आर्मेनिया को मान्यता प्रदान की और भारत और आर्मेनिया में राजनयिक संबंध स्थापित करने के लिए मॉस्को में 31 अगस्त, 1992 को प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर किए गए। इतिहासकारों ने सुझाव दिया है कि जब असिरियन योद्धा महारानी सेमिरामिस ने 2000 ई.पू. भारत पर आक्रमण किया, तब कुछ आर्मेनियाइओं ने उसका साथ दिया, जैसा कि वे संभवतः 326 ई.पू. महान सिकन्दर के साथ आए थे। उपलब्ध साहित्य संबंधी साक्ष्यों के अनुसार, दो भारतीय राजकुमारों द्वारा आर्मेनिया में भारतीय बस्तियां स्थापित की गईं थीं। वे लगभग 149 ई.पू. अपने परिवारों और बड़ी संख्या में परिजनों के साथ आर्मेनिया में पहुंचे थे। उन्हें आर्मेनिया के तत्कालीन शासकों द्वारा तारोन क्षेत्र (अब तुर्की में) में भूमि आबंटित की गई थी।

सम्राट अकबर आर्मेनियाइओं के वाणिज्यिक हुनर और उनकी सत्यनिष्ठा के बहुत बड़े प्रशंसक थे। इसलिए उन्होंने उन्हें बड़ी संख्या में विशेषाधिकार और काफी धार्मिक स्वतंत्रता दी तथा विभिन्न पदों पर अपने साम्राज्य में सेवा करने के अवसर भी प्रदान किए। सोलहवीं शताब्दी में, आर्मेनियाई समुदायों ने कोलकाता, चेन्नई, मुम्बई और आगरा में अपनी बस्तियां स्थापित कीं। आगरा में, 1562 में पहला आर्मेनिया गिरिजाघर (चर्च) संस्थापित किया गया। 1794 में मद्रास (चेन्नई) से प्रकाशित आर्मेनियाई भाषा की पत्रिका "अजदरर" विश्व में कहीं से भी प्रकाशित होने वाली पहली आर्मेनियाई पत्रिका थी। भारत में शेष बचे हुए आर्मेनियाई समुदाय के लोग अब मुख्यतः कोलकाता में बसे हुए हैं। 1707 में निर्मित, 1734 में जीर्णोद्धार और अलंकृत "नजरेथ" का पवित्र गिरजाघर (चर्च) कोलकाता में सबसे बड़ा और सबसे पुराना आर्मेनियाई गिरिजाघर (चर्च) है।

विदेश कार्यालय परामर्शी तंत्र (एफओसी) और व्यापार, आर्थिक, वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकीय, सांस्कृतिक और शैक्षणिक सहयोग पर अंतर–सरकारी आयोग (आईजीसी) और आवधिक उच्चस्तरीय वार्ताओं के जरिए भारत और आर्मेनिया में द्विपक्षीय संवाद आयोजित किए जाते हैं। भारत और आर्मेनिया ने हाल के वर्षों में अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में एक–दूसरे को सहयोग किया है। 2017 में आर्मेनिया को भारत का निर्यात 19.87 मिलियन अमेरिकी डॉलर था तथा इसी अवधि में आयात 2.83 मिलियन अमेरिकी डॉलर था।

21 जून, 2015 को पहला अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस आर्मेनिया में आयोजित किया गया जिसमें विभिन्न व्यवसायों से जुड़े 300 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के आयोजन से आर्मेनियाइओं में योग के लाभों के बारे में जागरूकता बढ़ी। अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन 2016 और 2017 में दोबारा से किया गया।

भारत ने येरेवन में आईसीटी में एक उत्कृष्टता केन्द्र स्थापित किया है और आर्मेनिया में स्कूलों को कम्प्यूटरों की आपूर्ति करने के लिए परियोजनाओं में सहयोग किया है। भारत आर्मेनियाइओं के लिए भारत तकनीकी आर्थिक सहयोग पाठ्यक्रमों का आयोजन करता है और केन्द्रीय हिन्दी संस्थान में हिन्दी के अध्ययन के लिए छात्रवृत्तियां भी प्रदान करता है। आर्मेनिया में भारतीय समुदाय छोटा है और इसमें अधिकतर येरेवन राज्य चिकित्सा विश्वविद्यालय और येरेवन इंजीनियरिंग एवं पॉलीटेक्निक विश्वविद्यालय में चिकित्सा शिक्षा ग्रहण करने वाले 800 से अधिक छात्र शामिल हैं।

मणिपुरी नृत्य :

मणिपुरी नृत्य भारत की मुख्य शास्त्रीय नृत्य शैलियों में से एक है जिसका नाम इसके मूल उद्गम स्थल, भारत के पूर्वोत्तर राज्य मणिपुर के नाम पर रखा गया है। यह विशेष रूप से अपने हिन्दू वैष्णवी विषयों और गहरे प्रेम से प्रेरित राधा–कृष्ण के नृत्य नाटक "रासलीला" की प्रस्तुतियों के लिए जाना जाता है। हालांकि, इस नृत्य का प्रदर्शन शैववाद, शक्तिवाद और क्षेत्रीय देवों जैसे कि लाईहराओबा के दौरान उमंगलाई से संबंधित प्रकरणों पर भी आधारित होता है। मणिपुरी नृत्य अपनी अनोखी वेशभूषा, सौन्दर्यपरकता, रीति–रिवाज और रंग कर्म युक्त एक सामूहिक प्रस्तुति है। मणिपुर नृत्य नाटक मनोहारी, धाराप्रवाह, लहरदार नृत्य है जिसमें हाथों और शरीर के ऊपरी अंगों की मुद्राओं पर विशेष जोर दिया जाता है। इसकी प्रस्तुति झांझ (करताल या मंजीरा) और संकीर्तन के दो–सिर वाले ड्रम (पुंग या मणिपुरी मृदंग) की ताल के साथ अन्य वाद्ययंत्रों से सृजित भक्ति संगीत के साथ की जाती है। मणिपुरी नृत्य एक धार्मिक कला है और इसका उद्देश्य आध्यात्मिक मूल्यों को अभिव्यक्ति प्रदान करना है। इस नृत्य का प्रदर्शन हिन्दू उत्सवों और मणिपुर के प्रमुख रीति–रिवाजों जैसे मणिपुरी लोगों के, विशेष रूप से अधिकांश मेतेई लोगों के शादी–विवाह के अवसरों पर किया जाता है। मणिपुरी नृत्य नाटक "वैष्णवी पदावली" के नाटकों और कहानियों पर आधारित होता है। इसने असम और पश्चिम बंगाल की प्रमुख गोदिया वैष्णव–संबंधित प्रदर्शन कलाओं को भी प्रेरित किया है।

होव आरेक नृत्य :

आर्मेनिया की नृत्य विरासत को सबसे पुराना और विविधता पूर्ण माना गया है। पांचवीं से तीसरी सहस्त्राब्दि ई.पू. तक, आर्मेनिया के ऊंचे क्षेत्रों, अरारात की भूमि में, देश के नृत्य के शैलचित्र पाए जाते हैं। ये नृत्य सम्भवतः कुछ विशेष प्रकार के गीतों अथवा वाद्य यंत्रों के साथ प्रस्तुत किए जाते होंगे।

आर्मेनिया के नृत्य "होव आरेक" की प्रस्तुति लोक गीत "होव आरेक सरेर जन" के आधार पर की जाती है, जिसका अर्थ है "प्रिय पर्वतों मेरे लिए हवाएं भेज दो"। इसका संकलन प्रसिद्ध आर्मेनियाई संगीतज्ञ और पादरी कोमीतस ने किया है। होव आरेक गीत एक प्रगीतात्मक गीत है जिसमें एक युवक अपने कष्टों से मुक्ति पाने के लिए पर्वतों से हवाएं भेजने की याचना करता है। यह दिल को छू लेने वाला गीत है जिसकी मधुर और रागात्मक पंक्तियों में हृदय के उद्गारों को अभिव्यक्ति प्रदान की गई है। "होव आरेक" नृत्य महिलाओं द्वारा प्रस्तुत किया जाता है, जो नृत्य को बड़ा मनोहारी, रमणीक और मृदु बना देता है। सभी नर्तक पारंपरिक वेश–भूषा पहनते हैं जिसमें उनके सांस्कृतिक इतिहास की झलक मिलती है।

डाक विभाग, भारत और आर्मेनिया द्वारा 'नृत्य' विषय पर दो स्मारक डाक–टिकटों का सेट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है। इस संयुक्त डाक–टिकट पर भारत के "मणिपुरी नृत्य" तथा आर्मेनिया के "होव आरेक" नृत्य का अंकन किया गया है।

आभारः–

मूलपाठ : विदेश मंत्रालय, भारत सरकार और आर्मेनिया पोस्ट से प्राप्त सूचना के आधार पर।

डाक–टिकट / मिनेयेचर शीट

प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका : श्री सुरेश कुमार

विरूपण मोहर : श्रीमती नीनू गुप्ता

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग Denomination	:	2500 पैसा, 500 पैसा 2500p, 500p
मुद्रित डाक-टिकटें Stamps Printed	:	500250 प्रत्येक 500250 each
मुद्रित मिनियेचर शीट Miniature Sheet Printed	:	1.1 लाख 1.1 lakh
मुद्रण प्रक्रिया Printing Process	:	वेट ऑफसेट Wet Offset
मुद्रक Printer	:	भारतीय प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at
http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्यः ₹ 5.00